International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

राजनीतिक अभिजन की संकल्पना: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. नौमी प्रिया

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, सम्भल

पूर्ण समानता पर आधारित मानव समाज की परिकल्पना असम्भव है, क्योंकि सत्ता व शक्ति अंततः कुछ ही लोगों के हाथों में केन्द्रित होती चली जाती है। आश्चर्य तो यह है कि यह प्रक्रिया प्रत्येक शासन प्रणाली में होती है, चाहे वह लोकतंत्र हो, राजतंत्र हो या कुलीनतंत्र है। शक्ति एवं सत्ता का यह सकेन्द्रण कैसे होता है? इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन है, लेकिन इसी का उत्तर ढुढ़ने के क्रम में ही अभिजन सम्बंधी संकल्पना का विकास हुआ। अभिजन की संकल्पना इस तथ्य पर आधारित है कि प्रत्येक समाज में समान्यतः दो वर्ग पाये जाते हैं- प्रथम वे लोग जो संख्या में कम लेकिन सत्ता, शक्ति एवं क्षमता के आधार पर समाज के शिखर पर होते हैं और दूसरा वह आमजन जो बहुसंख्यक होने के बावजूद सत्ता सम्पति से दूर समाज के तलहटी पर होते हैं। प्रथम वर्ग को अभिजन तथा दूसरे को आमजन कहा जाता है। पूर्व में अभिजन का अभिप्रायः राजनीतिक दृष्टि से उन अल्पसंख्यक लोगों के लिए किया जाता था, जो शक्ति सम्पन्न होते थे। लेकिन आज इसका आशय बदल गया है।

17 वी सदी में अभिजन शब्द का प्रयोग विशिष्ट एवं उत्तम वस्तुओं या गुणों के लिए किया जाग था। ऑक्सफोर्ड इंगलिश डिक्सनरी में इस शब्द को 1823 में सम्मिलित किया गया तथा इसको सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया गया। 19 वी शताब्दी के अंत तक इस सम्प्रत्य का व्यापक प्रयोग नहीं हुआ लेकिन 2. वीं शताब्दी में विशेष कर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पाश्चात्य देशों एवं अमेरिका में अभिजन का प्रयोग लोकप्रिय हुआ।

विलफ्रेडो पैरेटो[1] ने अभिजन को परिभाषित करते हुए कहा- ‘‘प्रत्येक विशिष्ट मानवीय क्रिया (जैसे न्यायालय, व्यापार कला राजनीति आदि) में अगर हम व्यक्तियों की गतिविधि (धंधे) के क्षेत्र के सूचकों को अंक दे, तो जो व्यक्ति सर्वोच्च अंक प्राप्त करते हैं उनको अभिजन कहा जाता है। दूसरे शब्दों में अभिजनों में उन सभी लोगों को शामिल किया जारा है, जो प्रत्येक गतिविधि में और समाज के प्रत्येक स्तर पर सर्वोच्च होते हैं। जिन व्यक्तियों को किसी विशिष्ट मानवीय गतिविधि के क्षेत्र में सर्वोच्च अंक मिले और यदि उनका एक वर्ग बनाया जाए तो उस वर्ग को अभिजन वर्ग का नाम दे सकते है।’’ उनका यह भी मानना था कि विभिन्न गतिविधियों एवं सामाजिक स्तरों पर पाये जाने वाले अभिजन प्रायः समाज के एक ही वर्ग से आते हैं। उन्होंने अभिजन वर्ग को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया- शासक अभिजन तथा गैर शासक अभिजन जिसे उन्होंने सिंह एवं लोमड़ी जैसे प्रतिकात्मक शब्दों से सम्बोधित किया।

गिटानो मोस्का[2] उन प्रथम विद्वानों में से हैं जिन्होंने अभिजन एवं जन समूह शब्दों का प्रयोग विशेष अर्थों में किया है। उनके शब्दों में- सभी समाजों में लोगों के दो वर्ग होते है एक शासकों का तथा दूसरा शासित्तों का। प्रथम वर्ग जो मूलतः अल्पसंख्यक है, सभी राजनीतिक कार्यों का सम्पादन करता है। शक्तियों पर एकाधिपत्य कायम करता है, तथा उस एकाधिपत्य से प्राप्त लाभों का फायदा उठाता है, जबकि दूसरा वर्ग, जो बहुसंख्यक है प्रथम वर्ग द्वारा इस प्रकार निर्देशित एवं उन माध्यमों द्वारा नियंत्रित होता है, जो न्यूनाधिक मात्रा में वैध है, न्यूनाधिक मात्रा में स्वेच्छाचारी तथा हिंसा प्रधान है। तथा जो प्रथम वर्ग के उन साधनों एवं उत्पादनों को प्रदान करता है, जो राजनीतिक निकायों की जीवंतता के लिए आवश्यक है।

हेराल्ड डी. लासवेल[3] के शब्दों में राजनीतिक अभिजन में राजनीतिक निकाय के सताधारियों का समावेश होता है। सताधारियों में वह नेतृत्व तथा सामाजिक रचना भी सम्मिलित है, जिससे नेताओं का उद्भव होता है तथा जिनके प्रति किसी निश्चित अवधि तक वे उत्तरदायी होते है।

रेमण्ड ऐरन[4] ने भी अभिजन वर्ग को मुख्यतः शासक वर्ग ही माना है जो अल्प संख्यक होता है। एस.पी. वर्मा[5] के अनुसार- ‘‘अभिजन वैसे सफल व्यक्तियों के समूह को कहेंगे जो समाज के हर व्यवसाय या हर स्तर में सर्वोच्च स्थान पर हो।’’ टी. बी. बोटोमोर के शब्दों में- ‘‘अभिजन शब्द का प्रयोग आम तौर से उन प्रकार्यात्मक मुख्यतः व्यवसायिक समूहों के लिए किया जाने

लगा है, जिनको समाज में उच्च स्थान प्राप्त है। इसी प्रकार हेराल्ड लासवेल6 के अनुसार किसी राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत शक्ति धारण करने वाला वर्ग ही राजनीतिक अभिजन कहलाता है। शक्ति धारण करने वाले वर्ग में नेतृत्व करने वाला वर्ग तथा वह सामाजिक समुदाय सम्मिलित है जिसमें वह वर्ग आता है। जिसके प्रति एक निश्चित अवधि तक उतरदायी रहता है।

अभिजन के उपर्यक्त सभी परिभाषाओं के विश्लेषणोंपरान्त अभिजन वर्ग की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती है:

1. राजनीतिक अभिजन वर्ग में थोड़े ही लोग आते हैं, अर्थात यह संख्या के आधार पर अल्पसंख्यक होते हैं।
2. इस वर्ग में कुछ ऐसे गुण होते हैं, जिसके कारण वे उच्चता या श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं।
3. सामान्यतः राजनीतिक अभिजन वर्ग में समाज के ऊँचे तबके के लोग ही सम्मिलित होते हैं।
4. राजनीतिक अभिजन वर्ग अपनी उच्चता या श्रेष्ठता के कारण समाज के बहुसंख्यक अभिजन पर शासन करता है अथवा अपने निर्णयों के अनुरूप बहुसंख्यकों को नियंत्रित या निर्देशित करता है।
5. राजनीतिक अभिजन वर्ग द्वारा लिए गए निर्णय समाज के सामान्य लोगों के लिए स्वीकार्य व मान्य होते हैं। यह स्वीकार्यता स्वेच्छा से भी हो सकता है और भय से भी।
6. राजनीतिक अभिजन वर्ग संगठित एवं सर्तक होते हैं।
7. राजनीतिक अभिजन वर्ग अपने वर्गीय हितों की रक्षा एवं संवर्धन के लिए सक्रिय रहते हैं।
8. राजनीतिक अभिजन वर्ग सामान्यतः अपने निर्णयों को लागू करने या अपने प्रभावों को बनाये रखने के लिए अनुनय-विनय के साथ बाध्यकारी एवं दबावकारी तरीकों को भी अपनाते हैं। यहाँ तक की धोखेबाजी व हिसंा का भी सहारा लेते हैं।
9. राजनीतिक अभिजन वर्ग की एकता उनकी सामान्य सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के कारण होती है।
1.. राजनीतिक अभिजन वर्ग अपना प्रभुत्व बनाये रखने के लिए शासन कला में निपूण होते हैं।
11. राजनीतिक अभिजन वर्ग के व्यक्तित्व में गतिशीलता होती है।
12. अभिजन वर्ग अपने हितों के संदर्भ में परिवर्तन के वाहक होते हैं।
13. अभिजन वर्ग अपने कार्यों को सही ठहराने के लिए भ्रान्त तर्कों का सहारा लेते हैं।
14. राजनीतिक अभिजन वर्ग आर्थिक उपलब्धी पर विशेष जोर देते हैं।
15. राजनीतिक अभिजन वर्ग का दृष्टिकोण व्यापक होता है।
16. अभिजन वर्ग तार्किक क्रिया करता है। अर्थात साध्य एवं साधनों को ध्यान में रखकर कार्य करता है।

राजनीतिक अभिजन वर्ग का संकल्पना के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि यह असामनता को संस्थागत रूप से मान्यता प्रदान करती है। अर्थात् राजनीतिक अभिजन वर्ग की अवधारणा इस मान्यता पर आधारित है कि कुछ लोगों का जन्म ही शासन करने के लिए होता है तथा कुछ का जन्म शासित होने के लिए।

इस प्रकार राजनीतिक अभिजन वर्ग की संकल्पना लोकतंत्रिक मूल्यों समानता, स्वतंन्त्रता के विरूद्ध है। लेकिन इसके वाबजूद शासन के सभी प्रणालियों में राजनीतिक अभिजन की उपस्थिति दृष्टिगोचर होती है। यहाँ तक कि समाजवादी व साम्यवादी शासन प्रणाली में भी किसी न किसी रूप में अभिजन वर्ग की उपस्थिति दिखाई देती है।

अतः कहा जा सकता है। कि राजनीतिक अभिजन राजनीतिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। यह दूसरी बात है कि इनकी उपस्थिति एवं क्रियाकलाप राजनीतिक व्यवस्था के अनुरूप भिन्न-भिन्न प्रकृति की होती हैं। आज विश्व का शायद ही कोई ऐसा देश हो जहाँ राजनीतिक अभिजन मौजूद न हो राजनीतिक अभिजन की संकल्पना के महत्व को इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है, कि इस संदर्भ में कई राजनीतिक व समाजशास्त्रियों ने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया यथा पैरेटो का अभिजन वर्ग का परिभ्रमण का सिद्धान्त, सी. राइट मिल्स का‘ शक्ति अभिजन का सिद्धान्त, थॉर्सटन वेबलेन का विलासी वर्ग का सिद्धान्त, राबर्ट मिचेल्स का अल्पतंत्र का लौह सिद्धान्त आदि। इस प्रकार अभिजन वर्ग का सिद्धान्त साजनीतिक समाजशास्त्र का एक महत्वपूर्ण संकल्पना है।

संदर्भ

1. विलफ्रेडो परेटो- दि माइंड एण्ड सोसाइटी, लंदन, जोनाथन केप, खण्ड-111, 1935, पृ.सं.- 1422-23
2. गिटानों मोस्का, द रूलिंग क्लास, न्यू यार्क मैग्रा हिल 1949, पृ.सं.- 5.
3. टी.बी. बोटोमोर, अभिजन और समाज (अनुवादक नेमिशरण मित्तल) नई देल्हीः दि मैक्मीलन कम्पनी ऑफ इंण्डिया लिमिटेड, 1977, पृ.सं.- 9

4. रेमण्ड ऐरन, ‘‘सोशल स्ट्रक्चर एण्ड दि रूलिंग क्लास’’ इन ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, वाल्यूम-1, नम्बर-1, मार्च 195., पृ.सं.- 1-16
5. एस.पी. वर्मा, मार्डन पोलिटिक्ल थ्योरि, विकास पब्लिकेशन न्यू दिल्ली, 1976, पृ.सं.- 227
6. हेराल्ड लासवेल, द कम्परेटिव स्टडी ऑफ एलिट्स, प्रिंसटन यू.पी. 1962, पृ.सं.- 22